

॥ ५६ ॥ ५७ ॥ ५८ ॥ ५९ ॥ ६० ॥ ६१ ॥ ६२ ॥ ६३ ॥ ६४ ॥ ६५ ॥ ६६ ॥ ६७ ॥ ६८ ॥ ६९ ॥ ७० ॥ ७१ ॥ ७२ ॥ ७३ ॥ ७४ ॥ ७५ ॥ ७६ ॥ ७७ ॥ ७८ ॥ ७९ ॥ ८० ॥ ८१ ॥ ८२ ॥ ८३ ॥ ८४ ॥ ८५ ॥ ८६ ॥ ८७ ॥ ८८ ॥ ८९ ॥ ९० ॥ ९१ ॥ ९२ ॥ ९३ ॥ ९४ ॥ ९५ ॥ ९६ ॥ ९७ ॥ ९८ ॥ ९९ ॥ १०० ॥ अतिमि

युवांविजयिनौचापिदिष्ट्यापस्यामिसंयुगे ॥ दिष्ट्याद्रोणोजितःसंख्येहार्दिक्यश्चमहाबलः ॥ ५६ ॥ दिष्ट्याविकर्णिभिःकर्णोरणेनीतःपराभवं ॥ विमुखश्चरुतः
शल्योयुवाभ्यांपुरुषर्षभौ ॥ ५७ ॥ दिष्ट्यायुवांकुशलिनौसंभ्रामात्पुनरागतौ ॥ पस्यामिरथिनांश्रेष्ठावुभौयुद्धविशारदौ ॥ ५८ ॥ ममवाक्यकरौवीरौममगौर
वयंत्रितौ ॥ सैन्याणवंसमुत्तीर्णौदिष्ट्यापस्यामिवामहं ॥ ५९ ॥ समरश्लाघिनौवीरौसमरेष्वपराजितौ ॥ ममवाक्यसमौचैवदिष्ट्यापस्यामिवामहं ॥ ६० ॥
इत्युक्त्वापांडवोराजन्युयुधानवकोदरौ ॥ सस्वजेपुरुषव्याघ्रौहर्षाद्वाण्यमुमोचह ॥ ६१ ॥ ततःप्रमुदितंसर्वबलमासीद्विशंपते ॥ पांडवानांरणेत्तुष्टुद्वायतुमनो
दधे ॥ ६२ ॥ इतिश्रीमहाभारतेद्रोणपर्वणिजयद्रथवधपर्वणियुधिष्ठिरहर्षैकोनपंचाशदधिकशततमोऽध्यायः ॥ १४९ ॥ ॥ ६३ ॥
संजयउवाच सैंधवेनिहतेराजनपुत्रस्तवसुयोधनः ॥ अश्रुपूर्णमुखोदीनोतिरुत्साहोद्विषजये ॥ १ ॥ दुर्मनानिःश्वसन्दुष्टोभग्नदंष्ट्रद्वोरगः ॥ आगस्तुत्सर्व
लोकस्यपुत्रस्तेऽर्तिपरामगात् ॥ २ ॥ दृष्ट्वातत्कदनंघोरंस्वबलस्यरुतमहत् ॥ जिष्णुनाभीमसेनेनसात्वतेनचसंयुगे ॥ ३ ॥ सविवर्णःकृशोदीनोबाष्पविप्लुतलो
चनः ॥ अमन्यतार्जुनसमोनयोद्वाभुविविधते ॥ ४ ॥ नद्रोणोनचराधेयानाश्चर्यामारुपोनच ॥ क्रुद्धस्यसमरेस्थानुपयांताइतिमारिष ॥ ५ ॥ निर्जित्यहिर
णेपार्थःसर्वान्मममहारथान् ॥ अवधीत्सैंधवंसंख्येनचकश्चिदवारयत् ॥ ६ ॥ सर्वथाहतमेवेदंकौरवाणामहहलं ॥ नत्यस्यविद्यतेत्रातासाक्षादपिपुरंदरः ॥ ७ ॥
यमुपाश्रित्यसंग्रामेरुतःशस्त्रसमुद्यमः ॥ सकर्णोनिर्जितःसंख्येहतश्चैवजयद्रथः ॥ ८ ॥ यस्यवीर्यसमाश्रित्यशमंयाचंतमच्युतं ॥ तृणवत्तमहंमन्येसकर्णोनि
र्जितोयुधि ॥ ९ ॥ एवंक्ळांतमनाराजन्नुपायाद्रोणमीक्षितुं ॥ आगस्तुत्सर्वलोकस्यपुत्रस्तेभरतर्षभ ॥ १० ॥ ततस्तत्सर्वमाचख्यौकुरुणांविशंसमहत् ॥ परान्वि
जयतश्चापिधार्तराष्ट्रान्निमज्जतः ॥ ११ ॥ दुर्योधनउवाच पश्यमूर्धाभिषिक्तानामाचार्यकदनमहत् ॥ कृत्वाप्रमुखतःशूरभीष्मंममपितामहं ॥ १२ ॥
तंनिहत्यप्रलुब्धोयंशिखंडीपूर्णमानसः ॥ पांचाल्यैःसहितःसर्वैःसेनाग्रमभिवर्तते ॥ १३ ॥ अपरश्चापिदुर्धर्षःशिष्यस्तेसव्यसाचिना ॥ अक्षौहिणीःसप्तहत्वा
हतोराजाजयद्रथः ॥ १४ ॥ अस्मद्विजयकामानांसुहृदामुपकारिणां ॥ गंतास्मिकथमानृण्यंगतानांयमसादनं ॥ १५ ॥

तिच्छेदः ॥ २ ॥ ३ ॥ ४ ॥ ५ ॥ ६ ॥ ७ ॥ ८ ॥ ९ ॥ १० ॥ ११ ॥ १२ ॥ १३ ॥ १४ ॥ १५ ॥ १६ ॥ १७ ॥ १८ ॥ १९ ॥ २० ॥ २१ ॥ २२ ॥ २३ ॥ २४ ॥ २५ ॥ २६ ॥ २७ ॥ २८ ॥ २९ ॥ ३० ॥ ३१ ॥ ३२ ॥ ३३ ॥ ३४ ॥ ३५ ॥ ३६ ॥ ३७ ॥ ३८ ॥ ३९ ॥ ४० ॥ ४१ ॥ ४२ ॥ ४३ ॥ ४४ ॥ ४५ ॥ ४६ ॥ ४७ ॥ ४८ ॥ ४९ ॥ ५० ॥ ५१ ॥ ५२ ॥ ५३ ॥ ५४ ॥ ५५ ॥ ५६ ॥ ५७ ॥ ५८ ॥ ५९ ॥ ६० ॥ ६१ ॥ ६२ ॥ ६३ ॥ ६४ ॥ ६५ ॥ ६६ ॥ ६७ ॥ ६८ ॥ ६९ ॥ ७० ॥ ७१ ॥ ७२ ॥ ७३ ॥ ७४ ॥ ७५ ॥ ७६ ॥ ७७ ॥ ७८ ॥ ७९ ॥ ८० ॥ ८१ ॥ ८२ ॥ ८३ ॥ ८४ ॥ ८५ ॥ ८६ ॥ ८७ ॥ ८८ ॥ ८९ ॥ ९० ॥ ९१ ॥ ९२ ॥ ९३ ॥ ९४ ॥ ९५ ॥ ९६ ॥ ९७ ॥ ९८ ॥ ९९ ॥ १०० ॥